ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 225-227

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

अहिंदी भाषियों का हिंदी में योगदान

एस. राजलक्ष्मी

सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग, लोयोला महाविद्यालय, चेन्नई (तमिलनाडु) भारत

Received- 30.11. 2019, Revised- 06.12.2019, Accepted - 11.12.2019 E-mail: rksharpur2@gmail.com

सारांश : **व्यक्ति समाज में अपने अस्तित्व बनाने के लिए अपने भाव– विचार एवं संवेदना को संप्रेषित करने के लिए भाषा का प्रयोग करता है। भाषा के बिना मनुष्य सर्वदा अपूर्ण है और अपनी इतिहास तथा परंपरा से अलग नहीं है। भाषा एक पद्धति है, जिसके द्वारा मानव परस्पर विचारों का आदान– प्रदान करता है। जी.एल ट्रेगर के शब्दों में "Alanguage is a system at orbitrary vocal symbols by means of which a social group co & operates".**

भारत में विभिन्न बोलियों के रूप में लगभग 780 भाषाएं प्रचलित है।इनको 66 लिपियों के द्वारा लिखा जाता है भारत के संविधान के द्वारा 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। इनमें जनसंख्या ,क्षेत्रीय विस्तार और बोलियों की संख्या की दृष्टि से हिंदी सबसे उन्नत भाषा है।

कुंजी शब्द– समाज, अस्तित्व, भाव–विचार, संवेदना, संप्रेषित, सर्वदा, बोलिया, क्षेत्रीय विस्तार, मान्यता, उन्नत।

करो अपनी भाषा पर प्यार ।
जिसके बिना मुख रहे थे तुम रुकते सब व्यवहार।।
जिसमें पुत्र पिता कहता है पत्नी प्राणाधार ,
और प्रकट करते हो जिसमें तुमने से निकल विचार ।
बढ़ायो बस उसका विस्तार।
करो अपनी भाषा पर प्यार।।
भाषा बिना व्यक्ति जाता है ईश्वरीय ज्ञान,
स्थानों से बहुत बड़ा है ईश्वर का यह दान।
असंख्यक है इसके उपकार ।
करो अपनी भाषा पर प्यार।।
यही पूर्वजों का देती है तुमको ज्ञान प्रसाद,
और तुम्हारा भी भविष्य को देखें शुभ संवाद।
बनाओ इसे गले का हार।
करो अपनी भाषा पर प्यार।। – मैथिलीशरण गुप्त

डॉ राजेंद्र प्रसाद की अध्यक्षता में सन 1946 में ही यह निर्णय लिया गया है कि सभा की कामकाज की भाषा हिंदुस्तानी अर्थ अंग्रेजी होगी। 14 जुलाई 1947 को संविधान सभा के चौथे सत्र में संशोधन प्रस्तुत किया गया, तब हिंदुस्तानी के स्थान पर हिंदी शब्द रखा गया।14 सितंबर 1949 राजभाषा संबंधी सभी अनुच्छेद ३४३(१) के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी हो गई।

हिंदी दीर्घकाल से पूरे देश में जन जन के पारस्परिक संपर्क की भाषा रही है। यह केवल उत्तरी भारत की नहीं, बल्कि दक्षिण भारत के आचार्य वल्लभाचार्य, रामानुज, रामानंद आदि ने भी इसी भाषा के माध्यम से अपने मतों का प्रचार किया था । हिंदी भाषी राज्यों के भक्त संत कवियों जैसे असम के शंकरदेव, महाराष्ट्र के ज्ञानेश्वर व नामदेव, गुजरात के नरसी मेहता, बंगाल के चौतन्य महाप्रभु आदि इसी भाषा को अपने धर्म और साहित्य का माध्यम बनाया था। इसी कारण से जनता और सरकार के बीच संवाद स्थापना के क्रम में फारसी या अंग्रेजी के माध्यम से दिक्कतें आई तो कंपनी सरकार ने फोर्ट विलियम कॉलेज में हिंदुस्तानी विभाग खोल कर अधिकारियों को हिंदी सिखाने की व्यवस्था कि यहां से हिंदी पढ़े हुए अधिकारियों ने विभिन्न क्षेत्रों में उसका प्रत्यक्ष लाभ देकर मुक्त कंठ से हिंदी को सराहा। सी.टी.मेटकाफ ने 1806 ई. में अपने शिक्षा गुरु जान गिलक्राइस्ट को लिखा– ''भारत के जिस भाग में भी मुझे काम करना पड़ा है। कोलकाता से लेकर लाहौर तक, कुमाऊं के पहाड़ से लेकर नर्मदा नदी तक मैंने उस भाषा का आम व्यवहार देखा है, जिसकी शिक्षा आपने मुझे दी है । मैं कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक या जावा से सिंधु तकइस विश्वास से यात्रा करने की हिम्मत कर सकता हूं कि मुझे हर जगह ऐसे लोग मिल जाए जो हिंदुस्तानी बोल लेते होंगे''। टाम रोबक ने 1807ई. में लिखा,'' जैसे इंग्लैंड जाने वाले को लैटिन सेक्सन या फ्रेंच के बदले अंग्रेजी सीखनी चाहिए वैसे भारत आने वाले को अरबी फारसी या संस्त के बदले हिंदुस्तानी सीखनी चाहिए। ''विलियम केरी ने 1816 ई. में लिखा,'' हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है।'' जॉर्ज ग्रियर्सन ने हिंदी को 'आम बोलचाल की महाभाषा' कहा है।इस प्रकार स्वतंत्रता के पूर्व भी हिंदी की महानता को देखकर अहिंदी भाषी संत हो या अंग्रेजी शासन के दौर के विदेशी लोग हिंदी की मुख्यता को पहचान कर उसके विकास के लिए योगदान दिए।

भारत में अहिंदी भाषी राज्यों में हिंदी बोलने वाले की संख्या बढ़ती रही। इन राज्यों में यह संपर्क भाषा के रूप में बोली, लिखी और पढ़ी जाती है। इसके अलावा

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

दुनिया के अनेक देशों में लगभग 12 –13 करोड लोग हिंदी का प्रयोग करते हैं। जहां – जहां भी भारतीयों के पांव पड़े, हिंदी के साथ पढ़े मोरिशियस, त्रिनिदाद, दक्षिण अफ्रीका, जावा, सुमात्रा, बर्मा, फिजी, गाना, सुरीनाम, नेपाल इत्यादि देशों में बसे करोड़ों भारतवंशी की भाषा हिंदी है। कई देशों में तो हिंदी की शाखाएं विकसित हो चुकी है। फिजी में 'फिजिबात', सुरीनाम में 'सरनामी', उज्बेकिस्तान और कजाकिस्तान में 'पारया', दक्षिण अफ्रीका में 'नेताली' हिंदी की ही नई शैलियों हैं। यहां तक कि कुछ शैलियों ने तो अपने व्याकरण और कोश बना लिए हैं।

स्वतंत्रता आंदोलन के समय धार्मिक आंदोलन, शिक्षा के प्रचार–प्रसार, सामाजिक कार्य ,व्यापारिक गतिविधियां और राजनीतिक कार्य में हिंदी भाषा के जरिए अनेकानेक भारत वासियों हिंदी व हिंदी भाषियों जैसे–मराठी, बंगाली, गुजराती, ओडिशा, तमिल भाषी लोगों ने सेवा किए। असहयोग आंदोलन के समय वैचारिक आदान–प्रदान और जनता तक संदेश पहुंचाने के लिए पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन शुरू किया गया तब जनसभाओं में हिंदी का ही प्रयोग होने लगा देश के सभी प्रदेशों के भाषा– भाषी पत्रकार, समाज सेवक, राजनेता, शिक्षक जब एक–जुट होते थे तब उनके संवाद की भाषा हिंदी में ही होती थी। इन सब में हिंदी भाषियों की संख्या अधिक थी। जब भी उन्हें अपनी बात राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाने थी तब हिंदी का सहारा लेना पड़ा। इसलिए उस समय के सभी नेताओं को हिंदी सीखना पड़ा हिंदी सीख कर वे अपने कौशल में वृद्धि करने के साथ–साथ हिंदी की सेवा भीकर रहे थे। मराठी भाषी केशव वामा पेठे १८६३ ई में, "राष्ट्र भाषा किंवा सर्व हिंदुस्तानची एक भाषा करणे" नामक पुस्तक पुणे से प्रकाशित की थी। जिसमें उन्होंने हिंदी को सर्वस्वीकृत राष्ट्रभाषा बनाने पर जोर दिया था।

स्वामी दयानंद सरस्वती हिंदी के महत्व को समझते हुए देश को एक सूत्र में बांधने का संकल्प लिया इसलिए अपने सबसे प्रमुख ग्रंथ "सत्यार्थ प्रकाश" की रचना हिंदी में की। वे गुजराती भाषी थे और संस्कृत के विद्वान थे, फिर भी आर्य समाज के विस्तार और उसका प्रचार–प्रसार का माध्यम हिंदी को बनाया चारों वेदों का भाष्य हिंदी में लिखे। "सत्यार्थ प्रकाश" की भूमिका में वे लिखते हैं," जिस समय मैंने यह ग्रंथ बनाया था उस समय और उससे पूर्व संस्कृत में भाषण करने पठन पाठन में संस्कृत ही बोलने और जन्मभूमि की भाषा गुजराती होने के कारण मुझे इस भाषा का विशेष ज्ञान ना था।

हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा मानने वालों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सर संघ चालक माननीय माधव सदाशिव गोलवलकर का नाम अग्रणीय है। वे मराठी भाषी थे किंतु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रशासनिक भाषा हिंदी को बनाया। हिंदी पत्रकारिता में अहिंदी भाषी पत्रकारों का योगदान महत्वपूर्ण है। कोलकाता नेशनल कॉलेज के हिंदी और मराठी के शिक्षक बाबूराव विष्णु पुराड़ कर "देशेर कथा" पुस्तक का अनुवाद हिंदी में करके बहुत प्रसिद्ध हुए। उन्होंने कोलकाता में ही "भारत मित्र" नामक समाचार पत्र हिंदी में निकाला पराडकर जी के सहयोग से वाराणसी से हिंदी का "आज" नामक दैनिक प्रकाशित किए। उसके संपादक के रूप में उन्होंने हिंदी पत्रकारिता को भाषाई अखबार से ऊपर उठा कर राष्ट्रीय पहचान दी।

देश भर में अनेक पश्चिमी, पूर्वी और दक्षिणी अहिंदी भाषी विद्वान हिंदी की सेवा में जुटे हुए हैं। विनोबा भावे ने वर्धा में हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना का बीजारोपण महात्मा गांधी के इच्छानुसार विद्यालय के रूप में शुरू किया। बंगाल के राजा राममोहन राय और केशव चंद्र सेन ने हिंदी के उत्थान में योगदान दिया है ओडिशा के विशाखापट्टनम की प्रोफेसर एस .शेषारत्नम दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार प्रसार में अब भी अपना योगदान कर रहे हैं। चेन्नई से प्रकाशित चंदामामा के हिंदी संस्करण के पूर्व संपादक डॉ बाल शौरी रेड्डी आजीवन हिंदी की सेवा करते रहे। तमिल के राष्ट्रकवि सुब्रमण्यम भारती पांडिचेरी से निकलने वाली तमिल साप्ताहिक "इंडिया" में "हिंदी केसरी" में प्रकाशित लेखोंका अनुवाद छापते थे। 1997 में स्वयं उन्होंने हिंदी वर्ग आयोजित कर तमिल माध्यम से हिंदी सीखें। कालांतर में उन्होंने "स्वदेश मित्रन" जैसे राष्ट्रीय भावना प्रधान तमिल पत्रिकाओं में हिंदी पाठों के तमिल रूपांतरण का प्रकाशन प्रारंभ कर दिया था।

महात्मा गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका से लौटकर भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने के पूर्व देश का भ्रमण किया। वे गुजराती भाषी थे और अंग्रेजी के अच्छे जानकार थे, किंतु भारत पहुंच कर उन्होंने हिंदी में ही अपनी बात रखना शुरू किया। चंपारण के किसान आंदोलन का नेतृत्व करते हुए वे लगभग 6 महीने वहीं किसानों के बीच में रहे। उस समय में उनका देश भर में हिंदी में ही संवाद होता था। आगे चलकर स्वतंत्रता आंदोलन में पूरी तरह सम्मिलित हो गए, तब छुआछूत, हरिजनोद्धार, भाषा विवाद के समापन इत्यादि पर गंभीरता से कार्य शुरू किए। उन्होंने 'हरिजन' नामक पत्र हिंदी में निकालना शुरू किया। स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की बैठक में हिंदी में बातचीत होती थी। सेवाग्राम हुए भी अपना पूरा पत्राचार हिंदी में ही करने का आग्रह करते थे। हिंद स्वराज के प्रकाशन काल 1901 से लेकर 1936 तक महात्मा गांधीजी हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की लगातार मांग करते रहे। उन्होने हिंदी को राष्ट्रभाषा

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

बनाने तथा इसका प्रचार–प्रसार पर बल देने के साथ दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार–प्रसार की आवश्यकता की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट करने के लिए 1980 में तमिलनाडु की राजधानी मद्रास के गोखले हॉल में पहली हिंदी कक्षा शुरू किए। गांधी जी के सुपुत्र देवदास गांधी ने एनी बेसेंट, सर सी.पी. रामास्वामी अय्यर, श्री भाष्यम अय्यंगार आदि के नेतृत्व में चेन्नई में हिंदी प्रचार का कार्य प्रारंभ किए। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना हुई। सभा ने दक्षिण भारतीयों को हिंदी सिखाने के लिए पाठ्य पुस्तक की तैयार की तब से लेकर आज तक हिंदी प्रचार सभा ने उत्तरोत्तर विकास किया है। हाल ही में हिंदी प्रचार सभानं अपने स्वर्ण वर्षगांठ सुचारू रूप से मनाया है।

मुंबई में भारतीय विद्या भवन के संस्थापक और कुलपति व कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी का हिंदी प्रेम विश्व प्रसिद्ध है। वे एक विद्वान राजनेता थे। लगभग 65 वर्ष पूर्व उनके मार्गदर्शन में मुंबई से 'नवनीत' का प्रकाशन शुरू हुआ। यह हिंदी की पहली डाइजेस्ट है। साहित्य और संस्कृति के प्रचार–प्रसार में इस पत्रिका का उल्लेखनीय योगदान रहा है। मुंशी जी ने ग्रंथों की रचना हिंदी में करके इस भाषा के प्रति अपनी आत्मीयता प्रकाशित की हैं। गुजराती भाषी मुंशी जी ने महाभारत के पात्रों–योगेश्वर, श्रीकृष्ण, कुंती, युधिष्ठिर, पितामह भीष्म, द्रोपति इत्यादि का जीवन चरित्र लिखकर हिंदी की बड़ी सेवा की है। वाल्मीकि रामायण का हिंदी में अनुवाद करना भी उनकी योजना थी। राजनेता के रूप में और महामहिम राज्यपाल रहते हुए कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी जी ने हिंदी भाषा में ही अधिकांश काम किया करते थे। मराठी भाषी के अनेक साहित्यकार हिंदी लेखन के माध्यम से स्वयं विख्यात हुए और हिंदी सेवा का श्रेय भी प्राप्त किया है। कोल्हापुर निवासी डॉ अनंत सदाशिव उल्तेकर बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में भारतीय संस्कृति विभाग के अध्यक्ष थे। वे हमेशा अपना शोध पत्र हिंदी में प्रस्तुत करते थे।

पूणे के ठाकरसी महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 काशीनाथ केरकर ने '18 वीं सदी के हिंदी पत्र' पर पी–एच0डी0 की उपाधि प्राप्त की थी। उनके साथी श्रीकृष्ण जी हरिपथ देशपांडे ने महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की ओर से लगातार 18 वर्षों तक हिंदी का प्रचार प्रसार करते रहे। नरदेव शास्त्री के नाम से ख्याति प्राप्त मराठी भाषी विद्वान नरसिंह राव हिंदी और संस्कृत के प्रकांड ज्ञाता थे । महात्मा मुंशीराम ने जन शिवालिक की उपत्यका में हरिद्वार के समीप गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की तो हिंदी के माध्यम से वेद, उपनिषद, भारतीय दर्शन शिक्षा और शोध कार्य का दायित्व सौंपा। नाशिकी के हिंदी प्रेमी रघुनाथ वैशंपायन के प्रयास से वर्ष 1940 में अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन पुणे में हुआ। वैष्णव संत नामदेव के अनेक अभंग हिंदी में हैं, जिन्हें काशी, प्रयाग, अयोध्या की यात्रा के दौरान उन्होंने लिखा था। हिंदी को प्रतिष्ठित करने में वामन पंडित, मुक्तेश्वर, सावरकर, खांडेकर, कवि गोविंद केलकर जैसे विद्वानों का सहयोग रहा है।

हिंदी में तमिल साहित्य का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत करने वाले विद्वान पूर्णम सोमसुंदरम थे। तमिल साहित्य के कई श्रेष्ठ ग्रंथों का अनुवाद हिंदी भाषा में हुआ है और इसके साथ हिंदी साहित्य के अनेक रचनाओं और काव्यों का तमिल भाषा में हुआ है। तमिल साहित्य की प्राचीनतम नीति ग्रंथ तथा तमिल वेद के नाम से प्रसिद्ध तिरुवल्लूवर रचित तिरुक्कुरल का हिंदी अनुवाद श्री.मु.गो. वेंकटकृष्णन ने किया है। कुरल (पद) डेढ़ पंक्तियों वाला तमिल का प्राचीनतम छंद है । तिरुक्कुरल में 1330 कुरल संकलित है । तेलुगु के मध्य युग के भक्त कवियों में वेमना, पोतना और संगीत वाग्गेयकार श्री कृत्यागराज की कृतियों को अनुदित कर हिंदी साहित्य भंडार को संपन्न बनाने में हिंदी प्रेमी तेलुगू रचनाकारों का योगदान स्तुत्य रहा है। 1957 में संत वेमाना शीर्षक से डॉ .चलसानि सुब्बाराव ने तेलुगु के मध्यकालीन महान संत कवि वेमना के 100 पदों का हिंदी रूपांतरण प्रस्तुत कर हिंदी तेलुगू भाषाओं की प्रकृति एवं विशेषताओं और बारीकियों का परिचय दिया है। इसके फलस्वरूप हिंदी के संत कवि कबीर के समक्ष वेमुना की प्रतिभा को हिंदी संसार के लिए गा्ह्य बनाया है। सठोत्तर कन्नड़ साहित्य को नई दिशा की ओर ले जाने वाले बी.वी.वैकुंठ राजूसंप्रतिख्यात कन्नड़ दैनिक ''प्रजावाणी'' के रविवारीय परिशिष्ट के संपादक हैं।

अहिंदी क्षेत्र वासियों ने अपने साहित्य, पत्र–पत्रिकाओं, व्यापार, शिक्षा, में हिंदी का प्रयोग बहुत ही उत्कृष्ट रूप से किया है। ज्यादातर राज्यों में हिंदी का प्रयोजनमूलक प्रयोग हो रहा है। वर्तमान काल में सोशल मीडिया ने हिंदी भाषा को एक सशक्त रूप में लाने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ रही हिंदी की प्रसिद्धि के कारण अहिंदी राज्यों के लोग भी अपने रचनाओं, संगोष्ठीयों, फेसबुक और इंटरनेट के माध्यम से हिंदी भाषा को आत्मसात कर रहे हैं। इस प्रकार अहिंदी क्षेत्रों के राज्यों ने अपने राष्ट्रीय उत्तरदायित्व को समझने के साथ साथ उसे कार्यान्वित भी किया है। इन सब से हमें यह ज्ञात होता है कि भारतवर्ष के अहिंदी साहित्यकारों और पत्रकारों और विद्वानों का योगदान हमारे राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति बखूबी योगदान है।

*****